वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 210 | मंगलवार 28 नवम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

जयपुर की 9 सीटों पर घटी महिलाओं की वोटिंग

आमेर में पिछले चुनाव के मुकाबले 3 फीसदी कम वोट पड़े ; किशनपोल में 5 .70% बढ़ी

जयपुर. कासं

राजस्थान विधानसभा चुनावों में इस बार महिलाओं की वोटिंग पिछले चुनाव (विधानसभा चुनाव 2018) के मुकाबले गिरी है। इस बार जिले की 19 सीटों में से 9 पर वोटिंग कम हुई। इसमें आमेर सीट ऐसी है, जहां इस बार 3 फीसदी वोटिंग कम हुई। इसके उलट किशनपोल सीट पर इस बार महिलाओं की वोटिंग पिछले चुनाव की तुलना में 5.70 फीसदी बढ़ी है। जयपुर जिले की 19 सीटों में से कोटपूतली, शाहपुरा, चौमूं, झोटवाड़ा, आमेर, जमवारामगढ़, बगरू, बस्सी और चाकसू में इस बार महिलाओं की वोटिंग पिछले चुनाव के मुकाबले कम हुई है, जबकि विराटनगर, फुलेरा, दूदू, हवामहल, विद्याधर नगर, सिविल लाइंस, किशनपोल, आदर्श नगर, मालवीय नगर और सांगानेर में

महिलाओं का वोटिंग प्रतिशत बढ़ा है। पुरुषों का वोटिंग प्रतिशत चाकसू, बस्सी, बगरू, आमेर, जमवारामगढ़ में गिरा है, जबकि शेष 14 सीटों पर बढ़ा है। इन चुनावों में इस बार जयपुर जिले की 4 विधानसभा सीटों पर महिलाओं की वोटिंग पुरुषों की तुलना में ज्यादा हुई है। इनमें कोटपूतली, विराटनगर, शाहपुरा और फुलेरा सीट शामिल है, जबकि साल 2018 के विधानसभा चुनावों में कोटपूतली, विराटनगर, शाहपुरा, चौमूं, फुलेरा ऐसी सीटें थी, जहां महिलाओं का वोट प्रतिशत पुरुषों की तुलना में ज्यादा था।

शाहपुरा में 39 बूथ ऐसे जहां 90 फीसदी से ज्यादा वोटिंग

जमवारामगढ़, सांगानेर, विद्याधर नगर, सिविल लाइंस, किशनपोल, आदर्श नगर, मालवीय नगर ऐसी विधानसभा है, जहां के किसी भी बूथ पर 90 फीसदी से ज्यादा वोटिंग नहीं हुई। शाहपुरा विधानसभा में 39 बूथ ऐसे रहे, जहां वोटिंग प्रतिशत 90 फीसदी से ऊपर रहा। इनके अलावा चौमूं में 11, कोटपूतली में 9, फुलेरा में 7, बस्सी, हवामहल में 4-4, बगरू, दूदू और विराट में 3-3, आमेर में 2 और चाकसू, झोटवाड़ा ऐसी विधानसभा ऐसी है, जहां केवल एक-एक ही बूथ पर 90 फीसदी से ज्यादा वोटिंग हुई।

कार्तिक मास के अंतिम दिन मनाई देव दीपावली

गोविंददेवजी मंदिर में 11 हजार दीपकों से हुई महाआरती, खीर-खिरसे का लगाया गया भोग

जयपुर. कासं

कार्तिक मास के अंतिम दिन राजधानी समेत पूरे प्रदेश में देव दीपावली मनाई गई। इस अवसर पर जयपुर के गोविंद देव जी मंदिर में ठाकुर जी की 11 हजार दीपकों से महाआरती की गई। कार्तिक महीने के अंतिम दिन मंदिर में भगवान के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं की सुबह 4 बजे से लंबी-लंबी लाइनें लगी। इस दिन मंदिर में रास पूर्णिमा की भी विशेष झांकी सजाई गई। इसके दर्शन शाम 7:15 बजे से लेकर 7:30 बजे तक भक्तों के लिए खोली गई। भगवान गोविंद देव जी को इस दिन सुनहरी पार्चा पोशाक, विशेष आभूषण और फूलों से सजाया गया। ठाकुर जी को रास उत्सव के अवसर पर खीर और खिरसा का भोग भी लगाया गया। मंदिर महंत अंजन कुमार गोस्वामी ने बताया कि भगवान को शरद पूर्णिमा पर खीर का भोग लगाया जाता है। शरद पूर्णिमा के अवसर पर चंद्रग्रहण था। जिस कारण भगवान गोविंद देव जी को खीर का भोग नहीं लगाया गया था। इसलिए आज रात पूर्णिमा के अवसर पर खीर और खिरसे का ठाकुर जी को भोग लगाया जा रहा है। इसके साथ ही मंदिर में ठाकुर और श्रीजी का रास का खाट भी सजाया जाता है। जिसमें चौसर, शतरंज की झांकी भी सजाई जाती है। साथ में दूध पान इत्र ठाकुर जी की सेवा में रखा जाता है।

श्रीसंघ एवं साध्वीवृंद ने की चातुर्मास समापन विदाई समारोह मे एक-दूसरे से खम्मत खावणाः अहिंसा भवन शास्त्रीनगर

संत हो या नहीं हो धर्मस्थान पर साधना और आराधना का क्रम नही रूकना और स्थान को ताला मत लगाना : महासाध्वी प्रितीसुधा

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

अंतरात्मा के दोषों को सुधारे बिना चातुर्मास सफल नहीं हो सकता है। सोमवार अहिंसा भवन शास्त्रीनगर में महा साध्वी डॉ. प्रितीसुधा ने चातुर्मास विदाई समारोह में सभी श्रध्दालूओं और श्रीसंघ से खत्मत खावणा करते हूए कहा कि धर्मस्थान पर संत हो या नहीं हो पर साधना और आराधना का क्रम रूकना एवं स्थान पर ताला नहीं लगना चाहिये जो धर्म लगन लगी है उसे बढ़ाने के साथ कषायों और मोह का त्याग करेगे और सभी को साथ लेकर आगें बढ़ोगे तो अपने जीवन और आत्मा का उत्थान संसार से कल्याण करवा पाओगे। साधु साध्वीयो का जीवन बहते पानी की तरह है जो एक स्थान ज्यादा समय तक नही ठहरते है क्योंकि वह अपना जीवन किसी सांसारिक मोह के बंधन मे नहीं बंधना चाहतें है वो हमे बंधनों से मुक्त होकर संसार के दुखों से निकालकर आत्मा का कल्याण का मार्ग दिखातें है। इस दौरान श्री अहिंसा भवन के मुख्य मार्गदर्शक अशोक पोखरना अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह बाबेल हेमन्त आंचलिया, कूशलसिंह बूलिया,सुशील चपलोत, रिखबचंद पीपाड़ा, संदीप छाजेड़,ओमप्रकाश सिसोदिया अभयसिंह आंचलिया, जसवंत सिंह डागलिया लक्ष्मणसिंह पोखरना आदि पदाधिकारियों एवं चंदनबाला महिला मंडल की अध्यक्षा नीता बाबेल, मंजू पोखरना संजूलता बाबेल,उमा आंचलिया,रजनी सिंघवी,सुनीता झामड़,मंजू बापना,सरोज महता,विनीता बाबेल, आशा संचेती,अंजना सिसोदिया,वंदना लोढ़ा रश्मि लोढ़ा तथा लाड़जी मेहता,सुशीला छाजेड़ लता कोठारी आदि सभी ने साध्वी उमरावकंवर महासाध्वी प्रितीसुधा,साध्वी मधुसुधा साध्वी संयमसुधा से चातुर्मास काल मे जाने अंजाने मे हुई भूला की क्षमायाचना करतें हुए साध्वी उमरावकंवर को समता विभूति डॉक्टर प्रितीसुधा मरुधरा गौरव तथा अन्य साध्वीयो को स्वाध्याय प्रेमी, दिव्य तपोधनी आदि से अलंकृत करतेहुए आदर की चादर ओढ़ाकर विभूषित किया गया। प्रवक्ता निलिष्का जैन ने बताया इसदौरान शांति भवन के अध्यक्ष महेन्द्र छाजेड़ मंत्री राजेन्द्र सुराणा आजाद नगर श्रीसंघ के प्रवीण कोठारी, बापूनगर श्रीसंघ के मंत्री अनिल विस्लोत प्रकाश बाबेल आदि अपने विचार व्यक्त किए चातुर्मास के बाद पधारने की साध्वी मंडल से विनती रखी। 28 रविवार प्रातं 9 बजे अंहिसा भवन से भव्य जूलूस के साथ साध्वी मंडल का शांति भवन भोपाल गंज पधारेंगे।

प्रवक्ता : निलिष्का जैन

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सांगाका बास ज़िला जयपुर में मूलनायक तीर्थंकर संभव नाथ का जन्म कल्याणक मनाया

जयपुर।जयपुर ज़िले की डूँगरी कला पंचायत के गाँव सांगाका बास जैन मन्दिर में सोमवार 27 नवम्बर को मूल नायक जैन धर्म के तीसरे तीर्थंकर श्री 1008 सम्भव नाथ भगवान का जन्म कल्याणक भक्ति भाव व श्रद्धा के साथ मनाया गया। श्रावकों ने भगवान का अभिषेक कर विश्व शांति हेतु शांतिधारा की ।शांति धारा का सोभाग्य केवल चंद, दुलीचंद ,राज कुमार ,पदम जैन बिलाला व मास्टर आदित बिलाला जयपुर को मिला। इसके बाद संभव नाथ भगवान की अष्ट द्रव्य से पूजन करके जयकारों के साथ जन्म कल्याण का अर्घ्य श्रीफल के साथ समर्पित किया गया ''संभव जिन के चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जाए''।

''निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज, निराबाध भविजन पाए''

मन्दिर समिति के अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि छोटे से गाँव सांगाके बास के अतिशय कारी सम्भव नाथ का मंदिर करीब पाँच सो वर्ष पुराना बताते है तथा कहावत है कि :- हर असम्भव हो सम्भव **''आयें सांगा का बास''**

सम्भव के दर्शन से,पूर्ण हो सब के मन की आस

आज के कार्यक्रम में जयपुर जोबनेर चोमू कालाडेरा डूँगरी किशनगढ़ रेनवाल चारणवास आदि स्थानो से पधारे सम्भव भक्त पुष्पा बिलाला, विमला बिलाला, माल चंद, ज्ञान चंद,हीरा लाल,मधु,आशा, रेखा रजनी बोहरा, वीरेंद्र बोहरा, ओमप्रकाश, आदि थे। अभिषेक पूजा का कार्य प. विरेंद्र ने सानंद सम्पन्न कराया ।कार्यक्रम भगवान सम्भव नाथ की मंगल आरती के साथ सम्पन्न हुआ।

सोशल मीडिया पर नग्नता का नंगा नाच

जीवन का चरमसुख अब फॉलोअर्स पाने और कमेंट आने पर निर्भर हो गया है। फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म पर नग्न अवस्था में तस्वीरें शेयर कर आज लड़कियां लाइक कमेंट पाकर खुद को अनुगृहित करती दिखाई देती है मानो जीवन की सबसे अहम और जरूरी ऊंचाई को उन्होंने पा लिया हो। इस नग्नता को हम आधुनिकता के इस दौर में न्यू फैशन कहते हैं। सोशल मीडिया पर फैशन की उबाल आई तो सोशल नेटवर्क पर युवा पीढ़ी ने खुद को खूबसूरत युवतियों से पीछे पाया, फिर क्या युवकों ने खुद की नग्नता का नंगा नाच शुरू किया कहा मैं पीछे कैसे ? युवा अपने यौवन को दिखाते घूम रहे हैं मैं किसी से कम नहीं। पहले के जमाने में बड़े बुजुर्ग इस तरह की हरकतों पर नकेल कसते थे। खैर जमाना आधुनिक है इस लिए समाज इसे स्वीकारता और आनंदित होता है। ऐसे बिगड़ैल यूट्यूबर के इंटरव्यूज होना और भी अचरज की बात है ।सोशल मीडिया पर आजकल जो ये फॉलोवर बढ़ाने के लिए जो नग्नता परोसी जा रही है। क्या उसमें परोसने वाले ही दोषी हैं? क्या उसको लाइक और शेयर करने वाले दोषी नहीं हैं ? मेरे हिसाब से तो वो ज्यादा दोषी हैं। अगर हम ऐसी पोस्ट या वीडियो को लाइक शेयर करना ही बंद कर दें तो क्या ये बंद नहीं हो सकता?

पूरा देश नग्नता के लिए फिल्मों को दोष देता है परंतु आज सोशल मीडिया (सामाजिक पटल) पर इतनी भयंकर नग्नता है कि हमारी जो भारतीय फिल्में को भी शर्म आ जाए। आज कोई भी सोशल प्लेटफार्म अछूता नहीं है फूहड़पन और नग्नता से। सोशल मीडिया के अंधे दौर में कुछ लाइक और व्यू पाने के लिए हमारे समाज की नारियों को कैसे लक्षित किया जा रहा है और उन्हें नग्नता परोसना पड़ रहा है। और वो लाइक और व्यू के आसमान में उड़ने के लिए नग्नता परोस स्वयं के मान सम्मान स्वाभिमान का सौदा आसानी से कर रही है। कुछ चप्पल छाप यूट्यूबर्स लोग केवल व्यू पाने के लिए हमारी आस्था पर इस तरह के अश्लीलता वाले थम्बनेल लगाते हैं।किससे क्या कहें? जीवन का चरमसुख अब फॉलोअर्स पाने और कमेंट आने पर निर्भर हो गया है। फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म पर नग्न अवस्था में तस्वीरें शेयर कर आज लड़कियां लाइक कमेंट पाकर खुद को अनुगृहित करती दिखाई देती है, मानो जीवन की सबसे अहम और जरूरी ऊंचाई को उन्होंने पा लिया हो। इस नग्नता को हम आधुनिकता के इस दौर में न्यू फैशन कहते हैं। सोशल मीडिया पर फैशन की उबाल आई तो सोशल नेटवर्क पर युवा पीढ़ी ने खुद को खूबसूरत युवतियों से पीछे पाया, फिर क्या युवकों ने खुद की नग्नता का नंगा नाच शुरू किया और कहा, मैं पीछे कैसे? युवा अपने यौवन को दिखाते घूम रहे हैं मैं किसी से कम नहीं। ऐसे बिगड़ैल यूट्यूबर के इंटरव्यूज होना और भी अचरज की बात है। पहले के जमाने में बड़े बुजुर्ग इस तरह की हरकतों पर नकेल कसते थे। खैर जमाना आधुनिक है इस लिए समाज इसे स्वीकारता और आनंदित होता है। पर ये बहुत ही गम्भीरता से सोचने का विषय है - हमारे घरों के छोटे-छोटे बच्चे किस दिशा में जा रहे हैं। माता-पिता क्यों जानबूझ कर अनदेखा कर रहें हैं? क्यों नहीं अपने बच्चों को टाईम और संस्कार देना चाहते हैं? क्यों अपने हाथो अपने बच्चो को दलदल में धकेल रहें हैं। आजकल के माता-पिता बहुत ज्यादा मार्डन है और उन्हें नंगापन, बॉयफ्रेंड और मार्डन परिवेश बेहद आकर्षित करती है। ये आने वाली पीढ़ी और समाज के लिए घातक सिद्ध होगा। टीनएजर लड़कियों की मनःस्थिति को अपने खास मकसद के मुताबिक ढाला जा रहा है। अब तो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस आभासी नग्नता के अड्डे बने हुए हैं। वल्गर रील्स और वीडियोस तो अब हर घर के टीनेजरस बना ही रहे हैं। अब तो ऐसा महसूस होने लगा है कि वैश्यावृति के अड्डे भी नये विकल्पों के साथ हवस परस्त मर्दो के लिए उपलब्ध हो गए हैं। सोशल मीडिया पर आजकल जो ये फॉलोवर बढ़ाने के लिए जो नग्नता परोसी जा रही है। क्या उसमें परोसने वाले ही दोषी हैं? क्या उसको लाइक और शेयर करने वाले दोषी नहीं हैं ? मेरे हिसाब से तो वो ज्यादा दोषी हैं। अगर हम ऐसी पोस्ट या वीडियो को लाइक शेयर करना ही बंद कर दें तो क्या ये बंद नहीं हो सकता ? आज सामाजिक विकार अपने सफर के सफलतम पड़ाव में है। रोकथाम की कोई गुंजाइश नही है। अब तो प्रलय ही इसकी गति को रोक सकती है। सोशल मीडिया में रील्स पर नग्न और अश्लील नृत्य की नौटंकी करने वाली बेटियों से निवेदन है कि चंद कागज के टुकड़ों के लिए अपने परिवार और धर्म की इज्जत तार-तार ना करो। पैसे आपको आज नृत्य के लिए नही अपितु नग्नता परोसने के लिए दिए जा रहे है ताकि पूरे समाज को एक दिन रसातल में धकेल कर नीचा दिखाया जा सके। हमारी संस्कृति ही नहीं बचेगी तो तो हमारे राष्ट्र का और आने वाली पीढ़ियों का दुर्गुणों से विनाश होने से कोई बचा नहीं सकता है। अभी समझे कि संस्कृति क्या है और इसे बचाना क्यों जरूरी है। यह हमारे राष्ट्र का स्वाभिमान है। हमें चाहिए अश्लीलता और नग्नता मुक्त समाज अपनी नष्ट हो रहे सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करें। बॉलीवुड की अश्लीलता, नग्नता और गाली गलौज से भरी फिल्मों और वेब सीरीज का बहिष्कार करें। अश्लील गाना एवं अश्लील फिल्मों

का बहिष्कार करें। सोशल मीडिया में ट्वीटर, फेसबुक आदि ऐसे प्लेटफार्म हैं जिसके माध्यम से लोग अपने विचार, अभिव्यक्ति के साथ किसी महत्वपूर्ण जानकारी का प्रेषण करते हैं। किन्तु वर्तमान में इन प्लेटफार्मों मे अश्लील,आपत्तिजनक व नग्नता पूर्ण मैसेज व विज्ञापन की भरभार होने के साथ जुए जैसे खेलों को खेलने के लिए प्रोत्साहित कर सामाजिक प्रदूषण फैलाया जा रहा है। हमारे नौनिहाल, बहन बेटी भी इन प्लेटफार्मों का बहुतायत उपयोग करते है। इस प्रदूषण पर अंकुश लगवाने के लिए सभी को सोचना होगा और खुद पहल करनी होगी। आज चेतना चाहिए नहीं तो कल रास्तों में होगा नंगा नाच। आप देश का भविष्य हो, कठपुतली मत बनो। स्वच्छंदता के नाम पर फूहड़ता सोशल मीडिया के इस दौर में अपने चरम पर है। हमारी संस्कृति में स्त्री को धन की संज्ञा से नवाजा गया वो भी बहुमूल्य न कि टके बराबर। इसलिए राजदरबारो में होने वाले मुजरे भी चारदीवारो के अंदर ही होते थे। सत्य यह है की अश्लीलता को किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं ठहराया जा सकता। ये कम उम्र के बच्चों को यौन अपराधों की तरफ ले जाने वाली एक नशे की दुकान है और इसका उत्पादन आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म स्त्री समुदाय के साथ मिलकर कर रहा है। मस्तिष्क विज्ञान के अनुसार 4 तरह के नशों में एक नशा अश्लीलता से भी है। आचार्य कौटिल्य ने चाणक्य सूत्र में वासना' को सबसे बड़ा नशा और बीमारी बताया है। यदि यह नग्नता आधुनिकता का प्रतीक है तो फिर पूरा नग्न होकर स्त्रियां पूर्ण आधुनिकता का परिचय क्यों नहीं देती? गली- गली और हर मोहल्ले में जिस तरह शराब की दुकान खोल देने पर बच्चों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है उसी तरह अश्लीलता समाज में यौन अपराधों को जन्म देती है। इसको किसी भी तरह उचित नहीं ठहराया जा सकता है। विचार करिए और चर्चा करिए या फिर मौन धारण कर लीजिए।

सोशल मीडिया पर फैशन की उबाल आई तो सोशल नेटवर्क पर युवा पीढ़ी ने खुद को खूबसूरत युवतियों से पीछे पाया, फिर क्या युवकों ने खुद की नग्नता का नंगा नाच शुरू किया और कहा, मैं पीछे कैसे? युवा अपने यौवन को दिखाते घूम रहे हैं मैं किसी से कम नहीं। ऐसे बिगड़ैल यूट्यूबर के इंटरव्यूज होना और भी अचरज की बात है। पहले के जमाने में बड़े बुजुर्ग इस तरह की हरकतों पर नकेल कसते थे। खैर जमाना आधुनिक है इस लिए समाज इसे स्वीकारता और आनंदित होता है। पर ये बहुत ही गम्भीरता से सोचने का विषय है - हमारे घरों के छोटे-छोटे बच्चे किस दिशा में जा रहे हैं। माता-पिता क्यों जानबूझ कर अनदेखा कर रहें हैं? क्यों नहीं अपने बच्चों को टाईम और संस्कार देना चाहते हैं? क्यों अपने हाथो अपने बच्चो को दलदल में धकेल रहें हैं।

डॉ. सत्यवान सौरभ
कवि, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार, आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट, 333, परी वाटिका, कौशल्या भवन, बड़वा (सिवानी) भिवानी, हरियाणा-127045,
मोबाइल :9466526148, 01255281381

वेद ज्ञान

प्रेम प्रवाह

प्रेम बहती नदी है, बंद तालाब नहीं। इसे परमार्थ के महानद में मिलने दें। यदि प्रेम नदी न हो तो जीवन को शुष्क मरुस्थल बनते देर नहीं लगती। प्रेम बहती नदी है, बंद तालाब नहीं। इसे परमार्थ के महानद में मिलने दें। यदि प्रेम नदी न हो तो जीवन को शुष्क मरुस्थल बनते देर नहीं लगती। स्वार्थ के संपुट में बंद प्रेम महज प्रेमाभास है। प्रेम ऊपर चढ़े तो भक्ति है और नीचे गिरे तो आसक्ति। प्रेम रागात्मक है, वासनात्मक नहीं। हमारा सारा प्रेम शुभ के लिए होना चाहिए। हम व्यक्ति से प्रेम नहीं करते, उसमें निहित आदर्श से प्रेम करते हैं। पति या पत्नी शरीर से प्रेम नहीं करते, उसमें निहित आत्मा से प्रेम करते हैं। परमात्मा को धर्मालयों में बंद न करें। उसे सर्वत्र प्रेम के रूप में खिलने दें। बंद फूल मुरझा जाता है। उसे उपवन की खुली हवा में खिलखिलाने दें। यदि आप जीवन में ऊंचाई को नापना चाहते हैं तो उपवन में खिले फूलों को देखें, जो खिलता है दूसरों को सुख देने के लिए और स्वयं मुरझाने के लिए। फूल कंटीली झाड़ी में भी मुस्कराता रहता है। क्या आप ऐसा कर सकते हैं? साधु की साधुता में ही प्रेम को मत देखें, बल्कि दुष्ट की दुष्टता में भी प्रेम को निहारने की साधना करें। जब तक बंदा और खुदा के बीच खुदी का पर्दा है, तब तक खुदा का दीदार नहीं। प्रेम निश्छल होना चाहिए। वह चाहे सांसारिक प्रेम हो या परमार्थिक प्रेम। प्रेम में प्रतिदान की तनिक भी गुंजाइश नहीं है। प्रेम के आगे मुक्ति भी निरादृत है। प्रेम-प्रेम के लिए होना चाहिए। यह भाव भी नहीं होना चाहिए कि वह प्रेम कर रहा है। प्रेम में केवल देना ही देना है, लेना कुछ भी नहीं। प्रेम को तिजारत न बनने दें। प्रार्थना का असली मंतव्य परमात्मा से किसी प्रकार की याचना नहीं है। अहंकार वह बाधक तत्व है, जो दैवी प्रेम को मनुष्य के भीतर उतरने ही नहीं देता। परमात्मा प्रेम है। उसे निश्छल प्रेम ही चाहिए। सूर्य प्रेमवश जीवनदायिनी किरणें विसर्जित करता है। मेघ भेद-भाव के बगैर सभी के खेतों में बरसता है। नदी प्यास मिटाने के लिए निरंतर बहती है। वृक्ष, फल लुटाने के लिए झुक जाते हैं। हवा जीवन देने के लिए बहती ही रहती है। इस प्रेम के बदले वे हमसे कुछ नहीं चाहते, परंतु हम लोग भ्रांत सुख की खोज में निर्ममता से इन सब का दोहन करते रहते हैं। इस संकट से बचने के लिए हमें अपने को सब के साथ प्रेम के बंधन में बंधकर चलना होगा, अन्यथा हमारा ही अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

संपादकीय

हार ही जीत का एक अहम पक्ष है...

विश्व कप के अंतिम नतीजों को लेकर बहुत सारे भारतीय खेल प्रेमी निराश हैं, तो कई लोग इसे राजनीतिक नजरिए से भी देख रहे हैं। जिस तरह भारतीय टीम पूरे खेल के दौरान लगातार जीत दर्ज करती रही और हमारे खिलाड़ियों का प्रदर्शन काफी बेहतर देखा गया, कई कीर्तिमान भी बने, उसमें स्वाभाविक ही उम्मीद बनी थी कि भारत विश्व कप जीतेगा। मगर अंतिम मैच में आस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलते हुए वही टीम कमजोर साबित हुई, तो इसे लेकर निराशा स्वाभाविक है। मगर क्रिकेट को अनिश्चितताओं का खेल कहा जाता है। कब किन स्थितियों में मजबूत टीम भी कमजोर पड़ जाती है, कहना मुश्किल है। कुल मिला कर देखें तो भारतीय टीम का प्रदर्शन अंतिम मैच में भी बुरा नहीं कहा जा सकता। बल्लेबाजी करते हुए उसके तीन खिलाड़ी जल्दी आउट हो गए, इसलिए

टीम रक्षात्मक होकर खेलने लगी थी और रनों की दर धीमी पड़ गई। गेंदबाजी और क्षेत्र रक्षण में भी खिलाड़ियों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। मगर जिस तरह लोगों में पहले से उत्साह बना हुआ था और पूरा विश्वास था कि भारतीय टीम ही इस बार का विश्व कप जीतेगी, उस धारणा के चलते बहुत सारे लोग इस मैच को खेल भावना से देख नहीं पाए और निराश हुए। जैसा कि हर हार के बाद कमजोर पक्षों को पहचानने का प्रयास किया जाता है, विश्व कप को लेकर भी अलग-अलग कोणों से इसकी पड़ताल हो रही है। बहुत सारे लोग भारतीय टीम की हार का ठीकरा खराब पिच पर फोड़ रहे हैं, क्योंकि आस्ट्रेलियाई टीम ने इसी वजह से पहले गेंदबाजी का निर्णय किया था। मगर उसी स्टेडियम में पहले भी भारतीय टीम खेल चुकी थी और वह उस पिच के मिजाज से अच्छी तरह वाकिफ थी। इसलिए पिच को दोष देना भी ठीक नहीं माना जा सकता। कई लोगों को इस बात पर हैरानी हो रही है कि आखिर के चालीस ओवरों में भारतीय टीम ने केवल चार चौके लगाए। सत्ताईस ओवरों में एक भी चौका-छक्का नहीं लगा। ऐसा क्या हो गया कि अपराजेय दिखते भारतीय खिलाड़ी इतने सुस्त पड़ गए? इसका बड़ा कारण शुरू में ही तीन खिलाड़ियों के आउट हो जाने से टीम पर पड़ा मनोवैज्ञानिक दबाव माना जा सकता है। इस तरह टीम रक्षात्मक होकर खेलती रही। मगर इसमें आस्ट्रेलियाई टीम के गेंदबाजों के कौशल को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि उन्होंने भारतीय बल्लेबाजों को चौके-छक्के जड़ने का मौका बहुत कम दिया। कुछ लोग इसमें सट्टेबाजी का भी अंदेशा जता रहे हैं। चूंकि पहले कुछ मौकों पर ऐसा हो चुका है और उसके चलते कुछ भारतीय खिलाड़ियों पर गाज भी गिर चुकी है। सर्वोच्च न्यायालय ने सट्टेबाजी पर रोक लगाने के लिए एक समिति भी बनाई थी। क्रिकेट बोर्ड में राजनीतिक दखलंदाजी बढ़ने से भी भारतीय टीम के प्रदर्शन को लेकर आशंकाएं जताई जाती रही हैं। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

तकरार...

दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल के बीच तकरार का फिलहाल कोई अंत नजर नहीं आता। सरकार के हर कदम पर उपराज्यपाल की ओर से अवरोध सामने आता है और फिर दिल्ली सरकार अदालत का दरवाजा खटखटाने चली जाती है। मुख्य सचिव की नियुक्ति को लेकर अब एक बार फिर दोनों के बीच का टकराव अदालत तक पहुंचा है। सर्वोच्च न्यायालय ने इसका समाधान सुझाते हुए केंद्र सरकार और उपराज्यपाल से कहा है कि वे पांच अधिकारियों के नाम दिल्ली सरकार को सुझाएं, ताकि वह उनमें से किसी एक को मुख्य सचिव के रूप में चुन सके। इस तरह बुधवार तक नए मुख्य सचिव के नाम की घोषणा हो सकती है। इस मामले की सुनवाई करते हुए एक बार फिर सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने पूछा कि उपराज्यपाल और मुख्यमंत्री राजनीतिक कलह से ऊपर ने उठ कर, आमने-सामने बैठ कर ऐसी समस्याओं का समाधान क्यों नहीं निकाल सकते। आप लोग हमें कोई ऐसा तरीका सुझाएं, जिससे सरकार चलाई जा सकती है। दरअसल, सर्वोच्च न्यायालय भी अब दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल के बीच के रोज-रोज के झगड़ों से तंग आ चुका है। मगर मुश्किल यह है कि केंद्र सरकार ने उपराज्यपाल के जरिए दिल्ली सरकार पर हर तरह से नकेल कसने का कानूनी इंतजाम कर रखा है। वर्तमान मुख्य सचिव का कार्यकाल इस महीने खत्म हो रहा है। उनकी जगह नए सचिव की नियुक्ति होनी है। दिल्ली सरकार ने वर्तमान मुख्य सचिव पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए हैं और उससे संबंधित रिपोर्ट भी उपराज्यपाल के पास भेजी है। हालांकि उपराज्यपाल ने रपट को राजनीतिक दुराग्रह से तैयार की हुई बताते हुए उस पर कोई कार्रवाई करने से इनकार कर दिया। दिल्ली सरकार को लग रहा था कि केंद्र सरकार कहीं वर्तमान मुख्य सचिव का कार्यकाल न बढ़ा दे । इसलिए उसने अदालत में गुहार लगाई कि चूंकि नए दिल्ली सेवा कानून को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है, इसलिए बिना दिल्ली सरकार से सुझाव लिए मुख्य सचिव के कार्यकाल में विस्तार या फिर नए मुख्य सचिव की नियुक्ति नहीं की जा सकती। नए कानून के मुताबिक मुख्य सचिव की नियुक्ति का अधिकार उपराज्यपाल को है। हालांकि जब यह नियम नहीं था, तब भी मुख्य सचिव की नियुक्ति में उपराज्यपाल की ही मर्जी चलती थी। इससे पहले दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग के प्रमुख की नियुक्ति के मामले में भी सर्वोच्च न्यायालय को जुलाई में दखल देना पड़ा था। तब भी अदालत ने यही कहा था कि ऐसे मामलों को उपराज्यपाल और मुख्यमंत्री को मिल बैठ कर क्यों नहीं सुलझाना चाहिए। यों जबसे दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार बनी है, तभी से उपराज्यपाल और सरकार के बीच तकरार की स्थिति बनी रहती है। इसके पहले भी जो उपराज्यपाल आए, उनके साथ दिल्ली सरकार का तालमेल ठीक नहीं रहा। इसे लेकर दिल्ली सरकार ने अदालती लड़ाई भी लड़ी। आखिरकार सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया था कि चुनी हुई सरकार को ही नीतियों से संबंधित फैसले करने का अधिकार है। उपराज्यपाल को उसमें दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। तब केंद्र सरकार ने अध्यादेश जारी कर सरकार की सारी शक्तियों को उपराज्यपाल में केंद्रित कर दिया। फिर उसे कानूनी जामा भी पहना दिया गया। हालांकि इसे संविधान की मूल भावना के विरुद्ध उठाया गया कदम बताते हुए चुनौती दी गई है। मगर इसके बाद से दोनों के बीच तकरार कुछ अधिक तीखा हो गया है। इसका असर दिल्ली सरकार की सेवाओं और आखिरकार जनसामान्य पर पड़ रहा है।

क्या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानवता के लिए खतरा है?

विजय गर्ग

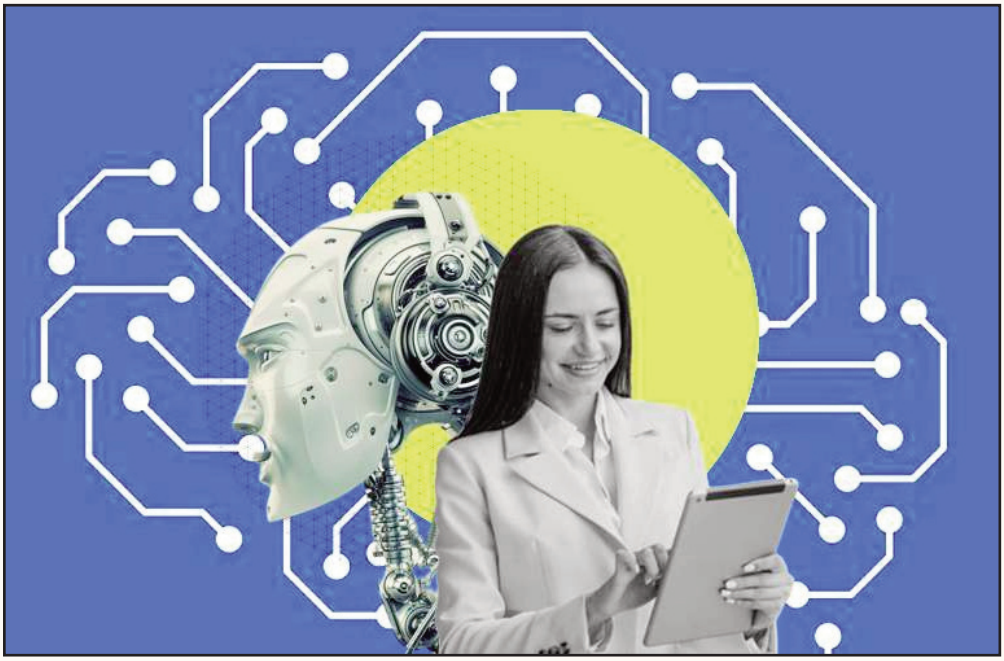

यदि आप आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर लेखों से भरे नहीं हैं, तो आप शायद चट्टान के नीचे रह रहे हैं। इनमें से कई लेख मशीनों द्वारा मानव जाति पर कब्जा करने पर आधारित एक डायस्टोपियन भविष्य की तस्वीरें उठाते हैं। यदि आप मानव जाति के भविष्य के बारे में पर्याप्त रूप से आशंकित हैं, तो मुझे अपना विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए कि अल क्या है और क्या नहीं है, और यह निकट भविष्य में हमारी दुनिया को कैसे आकार दे सकता है। अल कोई हालिया घटना नहीं है, हालांकि चैटजीपीटी जैसे विशिष्ट हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के मामले में इसने हाल ही में अधिक लोकप्रियता हासिल की है। यह शब्द पहली बार 1956 में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के कंप्यूटर वैज्ञानिक जॉन मैकार्थी द्वारा गढ़ा गया था। उन्होंने इसे ₹बुद्धिमान मशीनें बनाने का विज्ञान और इंजीनियरिंग₹ के रूप में परिभाषित किया। तब से, कई वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने इस क्षेत्र में काम किया है और हमने अनुसंधान के लिए धन की कमी के कारण कई बार व्यस्त गतिविधियों के साथ-साथ शुष्क दौर भी देखा है। दूसरा शब्द जो मैं संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहता हूं वह ट्यूरिंग टेस्ट है, जिसका नाम एलन ट्यूरिंग के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने कहा था कि यदि कोई मशीन मशीन के रूप में पहचाने बिना किसी इंसान के साथ बातचीत में संलग्न हो सकती है, तो इसने मानव बुद्धि का प्रदर्शन किया है। एलेक्सा जैसे उपकरणों और चैटजीपीटी जैसे सॉफ्टवेयर का विकास संभवतः शोधकताओं द्वारा ट्यूरिंग परीक्षण के मानदंडों को पूरा करने की कोशिश का परिणाम है। सबसे पहले, अल की थोड़ी समझ आवश्यक है। अल, अपने वर्तमान अवतार में, परिष्कृत पैटर्न पहचान से अधिक कुछ नहीं है। प्रोग्राम उपभोक्ता व्यवहार, भाषण, पाठ, तस्वीरों, मेडिकल डायग्नोस्टिक स्कैन आदि में पैटर्न की तलाश करते हैं। सॉफ्टवेयर को शब्दों, चित्रों, संख्याओं और स्कैन के एक बहुत बड़े डेटाबेस का उपयोग करके पैटर्न को पहचानने के लिए ₹प्रशिक्षित₹ किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई ग्राहक नियमित आधार पर किसी रिटेल आउटलेट से कुछ उत्पाद खरीदता है, तो एएल इस खरीद पैटर्न का पता लगाने में सक्षम होगा और ग्राहक को उसकी प्राथमिकताओं से मेल खाने वाले अनुकूलित मेल/विज्ञापन भेजे जा सकते हैं। जब चेहरे की पहचान की बात आती है, तो चित्र को कई बिंदुओं या पिक्सेल में विभाजित किया जाता है। सॉफ्टवेयर पैटर्न निर्धारित करने के लिए पिक्सेल का विश्लेषण करता है जो चेहरे की विशेषताओं के बारे में जानकारी देता है। फिर सॉफ़्टवेयर उस पैटर्न की तुलना करेगा जिस पर उसे प्रशिक्षित किया गया है, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या दोनों तस्वीरें एक ही व्यक्ति की हैं। अल द्वारा विकसित उत्तरों की सटीकता, या शुद्धता इसे प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग किए गए डेटा पर निर्भर है। प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर में बड़ी मात्रा में डेटा फीड करके किया जाता है, फिर सॉफ्टवेयर को पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने दिया जाता है। उत्तर की सटीकता के संबंध में मानवीय प्रतिक्रिया प्रदान करके, सॉफ़्टवेयर को ₹प्रशिक्षित₹ किया जाता है ताकि वह अपने अगले प्रयास में पैटर्न को समझने की अपनी क्षमता में सुधार कर सके। प्रशिक्षण में उपयोग किए गए डेटा में अंतराल और कमियों के कारण एएल द्वारा गलतियाँ करने के पर्याप्त सबूत हैं। ये गलतियाँ अमेरिका में चेहरे की पहचान में हुई हैं जहाँ कार्यक्रम ने गलत तरीके से किसी व्यक्ति को उस अपराध में संदिग्ध के रूप में पहचाना है जो उसके द्वारा नहीं किया गया है। एएल कार्यक्रमों के ऐसे कई उदाहरण हैं जो जाति, लिंग, उम्र आदि के आधार पर स्पष्ट पूर्वाग्रह दिखाते हैं, जब सॉफ़्टवेयर को प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला डेटाबेस खराब या पक्षपातपूर्ण रहा हो। सॉफ़्टवेयर की जटिलता के बावजूद, उनमें से कोई भी 100% विश्वसनीय नहीं है। कुछ लोग कह सकते हैं कि दोनों ही मनुष्य नहीं हैं। किसी सॉफ़्टवेयर को निर्णय लेने देने में दो प्रमुख खतरे हैं। सबसे पहले, अधिकांश अल सॉफ्टवेयर एक ब्लैक बॉक्स की तरह हैं। प्रोग्राम द्वारा प्रयुक्त तर्क पर प्रश्न उठाना संभव नहीं है। ये करता हैहमें ऑडिटट्रेल करने की अनुमति न दें। दूसरा, लोग सॉफ़्टवेयर के आउटपुट पर बहुत विश्वास करते हैं और इस पर सवाल नहीं उठाते हैं, यह मानते हुए कि कंप्यूटर इंसानों की तरह गलतियाँ नहीं कर सकते हैं। लेकिन जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, ऐसे कई उदाहरण हैं जहां अल ने त्रुटि की है। संपूर्ण मानव कार्य की जिम्मेदारी पूरी तरह से एक कंप्यूटर प्रोग्राम को सौंप देना गलत होगा, खासकर तब जब हम प्रोग्राम की विश्वसनीयता के बारे में आश्वस्त नहीं हैं। यदि त्रुटि के परिणामस्वरूप किसी व्यक्ति को गलत विश्वास हो जाता है, तो मानवीय दृष्टिकोण से परिणाम बहुत बड़े होते हैं। हम जो कर सकते हैं और शायद करना भी चाहिए, वह है मानव कार्य के दोहराव वाले घटक को स्वचालित करना। यह मानव को इनपुट प्रदान करके अधिक मूल्य जोड़ने के लिए स्वतंत्र करेगा जो कंप्यूटर नहीं कर सकते। इसका एक अच्छा उदाहरण हवाई जहाजों में ऑटो पायलट का प्रयोग है। किसी विमान को उड़ाने का सबसे लंबा और सबसे उबाऊ हिस्सा वह होता है जब वह अपनी परिभ्रमण ऊंचाई पर उड़ रहा होता है। टेक-ऑफ और लैंडिंग के लिए मानव पायलट की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। इसलिए, एक विमान को परिभ्रमण ऊंचाई पर ऑटो पायलट पर रखा जा सकता है क्योंकि पायलट द्वारा लगातार ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है। लेकिन हम पायलट को खत्म नहीं करते. हमने लंबी दूरी की उड़ान में ऑटो पायलट को तनाव दूर करने दिया। यदि स्थिति की मांग हो तो पायलट ऑटो पायलट को ओवरराइड कर सकता है। किसी भी तकनीकी विकास के कारण मानव श्रम में कमी आई है। चाहे वह भाप का इंजन हो, ट्रैक्टर हो, ऑटोमोबाइल हो, या यहाँ तक कि कंप्यूटर भी हो। प्रत्येक नवाचार के परिणामस्वरूप दोहराए जाने वाले मानवीय कार्यों की कठिनता समाप्त हो गई है, चाहे वह शारीरिक हो, या मानसिक। 1870 में, अमेरिका में सभी श्रमिकों में से आधे कृषि श्रमिक थे; 1900 में, सभी श्रमिकों का लगभग एक तिहाई; और 1950 में, सभी श्रमिकों के पांचवें हिस्से से भी कम। आज कृषि श्रमिकों की संख्या सभी श्रमिकों की लगभग एक प्रतिशत है। इस कमी का कारण इस अवधि में मशीनीकरण और खेत के आकार में वृद्धि है। जो प्रश्न पूछा जाना चाहिए वह यह नहीं है कि क्या प्रौद्योगिकी ने लोगों को विस्थापित कर दिया है; यह निश्चित रूप से हुआ। बल्कि हमें यह पूछना चाहिए कि क्या लोग आज मशीनों द्वारा किया जाने वाला काम करना चाहेंगे, जिसके लिए उपभोक्ता कितना भुगतान करने को तैयार होंगे। उत्तर, यकीनन, नहीं होगा। इसी तरह के परिदृश्य गैर-भौतिक कार्य स्थितियों जैसे कि गणना, लेखांकन आदि में देखे गए हैं, जहां कंप्यूटर ने प्रभावी रूप से मनुष्यों की जगह ले ली है, और यह सही भी है। आज कितने लोग पूरे दिन संख्याएँ जोड़ने का आनंद लेंगे? ऐसे कई मानवीय कार्य हैं जो स्वचालन के लिए उपयुक्त हैं। भारत में सबसे अपमानजनक और खतरनाक नौकरियों में से एक है सिर पर मैला ढोने का काम। क्या एएल संचालित समाधान मौत के उस जोखिम को खत्म करने का एक अच्छा तरीका नहीं होगा जो आज मैनुअल मैला ढोने वालों को सामना करना पड़ता है। ऐसे और भी कई काम हो सकते हैं जो इंसानों को नहीं करने चाहिए। जापानी कंपनियां, जैसे कि टोयोटा, इस नियम का उपयोग करती हैं कि यदि कोई कार्य गंदा, कठिन या खतरनाक है, तो यह स्वचालन के लिए एक अच्छा उम्मीदवार है। इस सूची में हम उबाऊ और दोहराव वाले भी जोड़ सकते हैं, जिसमें कोई मूल्य नहीं जोड़ा गया है। अंत में, मुझे लगता है कि अल के लिए प्रचार और भय दोनों ही बहुत ज्यादा हो गए हैं। यदि अल का परीक्षण यह है कि उसे मनुष्य की नकल करने में सक्षम होना चाहिए, तो हमें यह याद रखना होगा कि मनुष्य गलतियाँ कर सकते हैं और कंप्यूटर नहीं। साथ ही मनुष्य को असफलता या गलती का अवसर भी मिल सकता है, जैसे पेनिसिलिन की खोज। एक कंप्यूटर ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि उसे बताना होगा कि क्या देखना है। अंततः, मनुष्य निर्णय लेते हैं कि अल का उपयोग किस लिए किया जाना चाहिए, न कि इसके विपरीत। आइए हम इसे विवेकपूर्ण तरीके से करें।

विजय गर्ग @ सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
शैक्षिक स्तंभकार मालोट पंजाब

श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान पर पूज्यार्थियों द्वारा 1024 अर्घ्य अर्पित किए

जैन धर्म के तीसरे तीर्थंकर संभवनाथ भगवान का मनाया जन्मकल्याणक महामहोत्सव। आर्यिका संघ का पावन चातुर्मास 2023 हुआ निर्विघ्न रूप से सम्पन्न

फागी. शाबाश इंडिया

कस्बे में अष्टान्हिका महापर्व के दौरान आर्यिका श्रुतमति माताजी,आर्यिका सुबोध मति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में चल रहे महामंडल विधान में श्री जी का अभिषेक, शांतिधारा, अष्टद्रव्यों से पूजा-अर्चना के जैन धर्म के तीसरे तीर्थंकर भगवान संभवनाथ का जन्मकल्याणक महामहोत्सव मनाया गया तथा सामूहिक रूप से जन्म कल्याणक का अर्घ्य समर्पित कर सुख समृद्धि की कामना की गई साथ ही कार्यक्रम में प्रतिष्ठाचार्य कुमुद सोनी अजमेर वालों के दिशा निर्देश में पूज्यार्थियों द्वारा विधान पर 1024 अर्घ्य अर्पित कर सुख शांति समृद्धि और खुशहाली की कामना की गई।इसी कड़ी में चातुर्मास समिति के कमलेश मंडावरा एवं मितेश लदाना ने अवगत कराया कि कार्यक्रम में कपूरचंद, महावीर प्रसाद, सुरेश चंद्र, राजकुमार, पंकज कुमार, मनीष कुमार, सम्यक जैन मांदी वाले परिवार ने श्री जी की शांति धारा करने का सोभाग्य प्राप्त किया, जैन महासभा के मीडिया प्रवक्ता राजाबाबु गोधा ने अवगत कराया कि इसी कड़ी में आर्यिका संघ का पावन चातुर्मास 2023 निर्विघ्न रूप से विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा तथा सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा ने अवगत कराया कि कार्यक्रम में श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान पर 1024 अर्घ चढ़ाने के बाद विश्व शांति महायज्ञ के साथ विधान सम्पन्न हुआ, तथा सभी ने विश्व में सुख शांति और समृद्धि की कामना करते हुए खुशहाली की कामना कर आर्यिका संघ से मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया,इसी कड़ी में मंदिर समिति के कमलेश चोधरी तथा त्रिलोक पीपलू ने बताया कि कार्यक्रम सारे समाज ने बैन्ड बाजों के द्वारा मुख्य मंगल कलश के पुण्यार्जक रामावतार, अनिल कुमार, मुकेश, गणेश, बबलू जैन कठमाणा वालों के आवास पर मुख्य कलश विराजमान कर कठमाणा परिवार को मंगलमय शुभकामनाएं दीं, तथा सिद्ध चक्र महामंडल विधान का मुख्य कलश सौधर्म इन्द्र परिवार नेमीचंद अशोक कुमार, विनोद कुमार कागला परिवार के आवास पर बेन्ड बाजों के द्वारा सारे समाज ने विराजमान कर शुभकामनाएं दी,कार्यक्रम में समाज सेवी कैलास कलवाड़ा, सोहनलाल झंडा, नेमीचंद कागला, रामस्वरूप मंडावरा, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा,सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा,फागी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा, पूर्व प्रधान महावीर प्रसाद जैन, संतोष बजाज,केलास कासलीवाल,भागचंद कासलीवाल, कैलास कडीला, राजेंद्र मोदी,महावीर मोदी,सुरेंद्र बावड़ी, धर्मचंद पीपलू, कमलेश मंडावरा, विमल कलवाडा, पदम बजाज,पारस मोदी, सिद्धकुमार मोदी, अनिल कठमाना,अशोक कागला, कमलेश चौधरी, मुकेश गिंदोडी, मनीष गोधा, विनोद मोदी, त्रिलोक पीपलू, तथा राजाबाबु गोधा सहित सारे श्रावक श्राविकाएं साथ-साथ थे।

प्राचीन कलात्मक रजत रथ पर निकली जिनेंद्र भगवान की शोभायात्रा

लाडनूं. शाबाश इंडिया। स्थानीय दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में हो रही 8 दिवसीय पंचमेरु नंदीश्वर पूजा अनुष्ठान का सोमवार को समापन हुआ। इस अवसर पर कार्तिक महोत्सव के रूप में प्राचीन व कलात्मक रजत रथ में जिनेंद्र भगवान की शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ नगर के प्रमुख मार्गों से होकर निकली। जिसमें भगवान महावीर,जैन धर्म व अंहिसा परमोधर्म के नारों के साथ भजन गाते हुए जैन समाज के सदस्य शामिल हुए। जैन समाज के सदस्य राज पाटनी ने बताया कि रथयात्रा जैन बड़ा मंदिर,शांतिनाथ चौक से नगर के मुख्य मार्गों से होकर बड़ा जैन मंदिर पंहुची जहां जिनेंद्र भगवान की पूजा अर्चना व अभिषेक किए गए। शोभायात्रा के मार्ग में श्रावकों ने अपने घर के द्वार पर जिनेंद्र भगवान विराजित रथ का श्रद्धा पूर्वक अभिनंदन किया व आरती उतारी। जैन धर्म के विद्वान डा. सुरेंद्र जैन ने बताया कि बड़ा जैन मंदिर में आयोजित हुए 8 दिवसीय अष्टानिका पर्व में समाज के सदस्य भक्ति भाव व हर्षोल्लास के साथ शामिल हुए। प्रतिदिन प्रातः श्री जी की शांतिधारा, अभिषेक व दोपहर में पूजा तथा रात्रि में शास्त्र प्रवचन आयोजित हुए। कार्तिक महोत्सव के अवसर पर शाम को कंवरलाल राजकुमार पाटनी सूरत परिवार की ओर से जैन भवन में सामुहिक स्नेह भोज का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों में समाज के सभी सदस्य बड़ी संख्या में शामिल हुए।

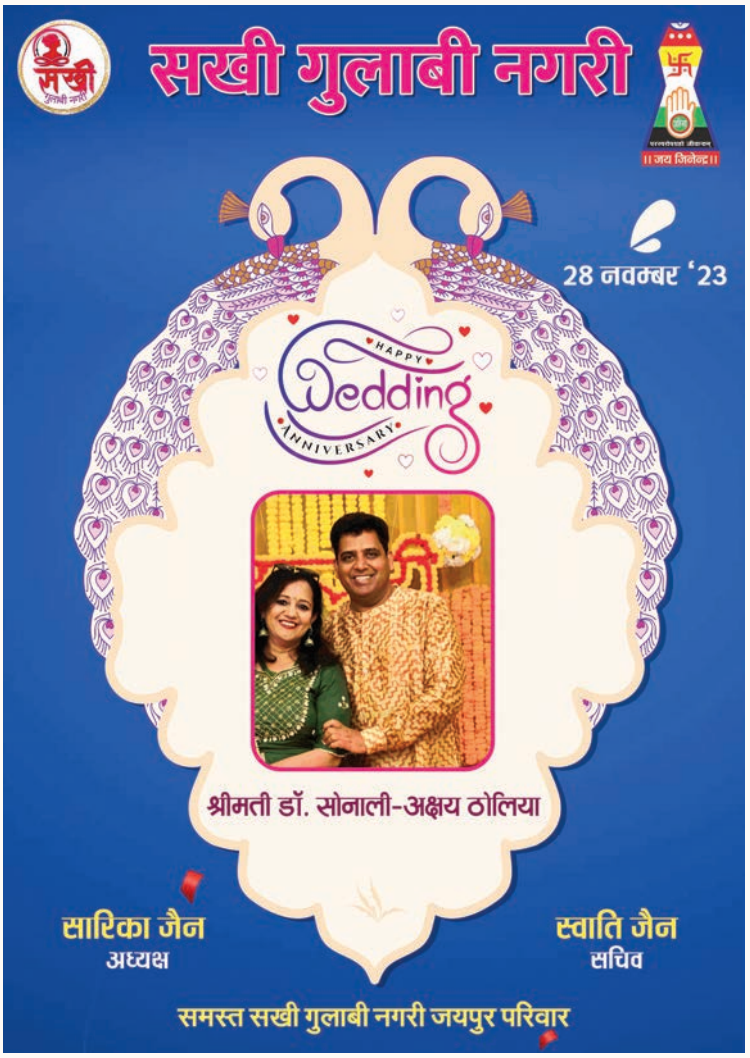

शुभम केअर हॉस्पिटल ने बेडमिंटन में सिल्वर मेडल जीता

जयपुर. शाबाश इंडिया

निविक डॉक्टर्स बेडमिंटन लीग चैप्टर 5 के टीम इवेंट में शुभम केयर हॉस्पिटल, मानसरोवर की टीम ने विमेन केटेगरी में सिल्वर मेडल जीता। शुभम केयर के डॉ शैलेश जैन एवं डॉ सपना जैन ने बताया कि डॉक्टर्स बैडमिंटन लीग जयपुर में हर साल डॉ अनिल यादव की टीम आयोजित करती है। हमारे अस्पताल ने पहली बार वीमेन केटेगरी में टीम उतारी और अच्छा प्रदर्शन कर सिल्वर मेडल हासिल किया। टीम में डॉ मीनाक्षी अग्रवाल, डॉ प्रियंका सैनी, डॉ विदिशा, डॉ कुसुम एवं डॉ जिज्ञासा ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और टीम को जीत दिलायी।

हमारी संस्कृति हमारी पहचानः गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। प. पू. भारत गौरव गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी जिला टोंक (राज.) में धर्म की महती प्रभावना कर रही है। माताजी के प्रभावपुंज सान्निध्य में कई व्रती श्राविकाओं के व्रत निर्विघ्न पल रहे हैं। माताजी के मुखारविंद से होने वाली अभिषेक, शांतिधारा करने के लिए दूर - दूर से भक्तगण सम्मिलित होते हैं। माताजी ने अपने मंगल उद्बोधन के माध्यम से प्रत्येक श्रावक को धर्म, देश, राष्ट्र व संस्कृति से जोड़ने का प्रयास करते हुए कहा कि हमारी संस्कृति हमारी पहचान है। भारत की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और सबसे समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। इसे हजारों वर्षों के इतिहास द्वारा आकार दिया गया है और विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों से प्रभावित किया गया है। हमारी संस्कृति गर्व का स्त्रोत है क्योंकि यह हमारे अतीत और विरासत का प्रतिबिंब है। आज हम जिन विविध सांस्कृतिक प्रथाओं और परंपराओं का पालन करते हैं, वे हमारे पूर्वजों के संघर्षों और विजय का प्रमाण हैं। किसी भी देश में संतों का जन्म नहीं हुआ मात्र भारत ही ऐसा देश है जहां महापुरुषों ने जन्म लिया। इसलिए हमें अपनी संस्कृति पर गर्व करना चाहिए न कि विदेशों की अर्थात पाश्चात्य संस्कृति को धारण करना चाहिए। आगामी 10 दिसम्बर 2023 को होने वाले पिच्छिका परिवर्तन एवं 108 फीट उत्तुंग कलशाकार सहस्त्रकूट जिनालय के भव्य शुभारम्भ में सम्मिलित होकर इस सुअवसर में साक्षी बनकर पुण्यार्जन करें ।

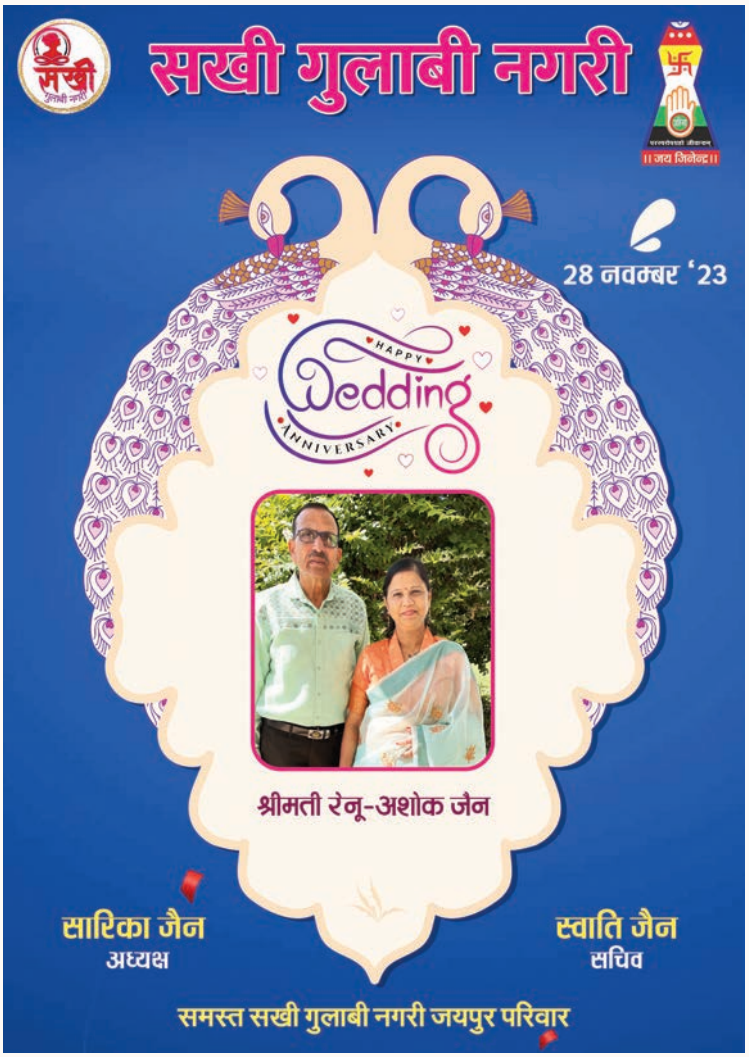

जैनेश्वरी दीक्षा के साथ हुआ आचार्य श्री विनम्र सागर जी का पिच्छिका परिवर्तन

अभिनंदनोदय तीर्थ में कल्पद्रुम विधान, विश्वशान्ति महायज्ञ सम्पन्न

ललितपुर. शाबाश इंडिया

अभिनंदनोदय तीर्थ (क्षेत्रपाल) ललितपुर में कल्पद्रुम महामण्डल 25 समवसरण विधान विश्व शान्ति महायज्ञ के समापन पर 26 नवम्बर को मध्यान्ह में उच्चारणाचार्य विनम्रसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में दो जैनेश्वरी दीक्षाएं एवं पिच्छिका परिवर्तन प्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री ने जैनेश्वरी दीक्षा की महिमा बताते हुए कहा यह संयम की उत्कृष्ट साधना है। कार्यक्रम के शुभारम्भ में गणाचार्य विरागसागर महाराज के चित्र के सम्मुख दीपप्रज्जवलन श्रेष्ठी परिवार द्वारा किया गया जबकि आचार्य लश्री के पादप्रक्षालन का पुण्यार्जन राजेन्द्र जैन ,अंकित जैन मोनू थनवारा द्वारा किया गया। पाठशाला की बालिकाओं ने मंगलाचरण कर भव्य प्रस्तुति दी। पुण्यशाली भव्यजनों ने आचार्यश्री एवं संघस्थ मुनिराज विज्ञ सागर महाराज, मुनि श्री विनुत सागर महाराज, मुनि श्री शुभ सागर महाराज, मुनि श्री विश्वधीर सागर महाराज, मुनि श्री विश्वमित सागर महाराज, आर्यिका विमल श्री माता जी, आर्यिका विनेह श्री माता, वितप श्री माता जी, विसम श्री माता जी, विपुल श्री माता जी, विमुद श्री माता जी, विभव्य श्री माता जी, विशर्व श्री माता जी, प्रमा श्री माता जी

की नवीन पिच्छिका का विमोचन कर आचार्यश्री को सौपी जिन्हें आचार्यश्री के करकमलों द्वारा साधुओं एवं पुरानी पिच्छिकाए

संयमी श्रावकों को प्रदान की गई जिसकी संयोजना ब्रह्मचारिणी प्राची दीदी ने की। कार्यक्रम के पूर्व में नवीन पिच्छिका को लेकर श्रावकों ने भव्य शोभायात्रा वर्णी चौराहे से तलैया होते हुए निकाली जो अभिनंदनोदय तीर्थ पहुंची जहां प्रभावना पूर्वक अगुवाई हुई। शोभायात्रा में सुधा कलश महिमा मण्डल का दिव्य घोष एवं महिला संगठनों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान आचार्य श्री के सम्मुख संघस्थ ब्रह्मचारी पवन भैया बीना एवं सुकुमाल भैया भोपाल ने दीक्षा का निवेदन किया। परिवारजन, समाज श्रेष्ठी एवं संघस्थ साधुओं की सहमति के उपरान्त आचार्य श्री ने दीक्षा संस्कार की क्रियाएँ सम्पन्न की जिसमें मुनिराज विज्ञसागर महाराज एवं प्रतिष्ठाचार्य पं० पवन जैन दीवान सागर का सहयोग रहा। दीक्षा के उपरान्त आचार्य श्री ने पवन भैया का नामकरण एलक विनमित सागर एवं सुकुमाल भैया का नामकरण क्षुल्लक विश्वगुण सागर जयजयकारों के बीच किया। इस मौके पर प्रमुख रूप से प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री मनोहर लाल पंथ, विधायक सदर रामरतन कुशवाहा, जिला पंचायत अध्यक्ष कैलाश नारायण निरंजन, भाजपा जिलाध्यक्ष राजकुमार जैन, प्रेस क्लव अध्यक्ष राजीव बबेले सप्पू, पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा प्रदीप चौबे, धर्मेन्द्र गोस्वामी के अतिरिक्त क्षेत्राधिकारी सदर अभयनारायण राय को दिगम्बर जैन पंचायत ने प्रतीक चिन्ह के साथ सम्मानित किया। इसके पूर्व प्रातःकाल उच्चारणाचार्य विनम्रसागर महाराज के संसघ सानिध्य में नित्यमह पूजन एवं शान्तिधारा पुर्णाजक परिवार द्वारा की गई। प्रतिष्ठाचार्य पं० पवन जैन दीवान एवं सहयोगी पं० संतोष जैन अमृत ने विधान की मांगलिक क्रियाएं एवं विश्वशान्ति महायज्ञ हवन सम्पन्न कराया जिसमें मुख्य पात्र चक्रवर्ती आनंद जैन प्रियंका जैन भावनगर, सौधर्म इन्द्र अशोक जैन सुमन जैन उमरिया, धनपति कुवेर महेश जैन लवी जैन झरावटा, वैभव-वैशाली सर्राफ, शुभम साक्षी जैन सर्राफ किसलवास, महायज्ञनायक का० मनोज जैन मानसी जैन, ईशान इन्द्र अंशुल सराफ, महामण्डलेश्वर राजीव जैन नमिता जैन सानतेन्द्र कपूरचंद लागौन, माहेन्द्र धन्यकुमार जैन एडवोकेट सहित शताधिक इन्द्र इन्द्राणि सम्मलित हुए । इस मौके पर अनिल जैन अंचल, डा० अक्षय टडैया, आकाश जैन भारत गैस, सनत जैन खजुरिया, सौरभ जैन सीए, मनोज जैन बबीना, मोदी पंकज जैन, राजेन्द्र जैन थनवारा, संजीव जैन ममता स्पोर्ट, अशोक दैलवारा, विजय जैन, कैप्टन राजकुमार जैन, डॉ सुनील संचय, पुल्ली सराफ, अक्षय अलया प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

-डॉ सुनील संचय

श्री प्रदीप-श्रीमती प्राची जैन बाकलीवाल

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सन्मति के सयुक्त सचिव

की वैवाहिक वर्षगांठ (28 नवंबर) पर

हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

Happy Anniversary

9414070596

शुभेच्छु

अध्यक्ष: राकेश-समता गोदिका,

संरक्षक: सुरेंद्र - मृदुला पांड्या, दर्शन - विनीता जैन, **परामर्शक:** दिनेश-संगीता गंगवाल

कार्याध्यक्ष: मनीष - शोभना लोंग्या, **सचिव:** अनिल - निशा संघी, **कोषाध्यक्ष:** अनिल - अनिता जैन

एवं समस्त सदस्य दिग. जैन सोशल ग्रुप सन्मति, जयपुर

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका

@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

shabaasindia@gmail.com

weeklyshabaas@gmail.com

निवाई में दीक्षार्थियों की बिन्दौरी गाजे बाजे से निकाली गई

आध्यात्मिक अभिनन्दन, बिन्दौरी एवं गोद भराई कार्यक्रम

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान मे चातुर्मास कर रहे जैन मुनि शुद्ध सागर महाराज एवं क्षुल्लक अकम्प सागर महाराज के सानिध्य में गाजे बाजे से दीक्षार्थियों की बिन्दौरी निकाली गई जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। जैन समाज के विमल जौंला एवं राकेश संधी ने बताया कि गणाचार्य विराग सागर महाराज के शिष्य जैन मुनि विश्रांत सागर महाराज के कर कमलों द्वारा तीन दीक्षा 8 दिसंबर को सिद्ध क्षेत्र फलहोडी.बड़ागांव जिला टीकमगढ़ मध्यप्रदेश में होने जा रही है जिसमें भारत वर्ष में दिगम्बर जैन समाज निवाई का सौभाग्य है कि वैराग्य की ओर बढ़ते इन मोक्षमार्गी की भव्य बिन्दौरी एवं गोदभराई करने का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ है इस मौके पर रविवार को शाम दीक्षार्थियों की भव्य बिन्दौरी बग्गी में विराजमान करके धर्म प्रभावना महिला मण्डल के तत्वावधान में बसंत कालोनी वैयरहाउस से गाजे बाजे के साथ रवाना होकर बिन्दौरी मुख्य मार्गों से होती हुई बड़े जैन मंदिर एवं बिचला जैन मंदिर पहुंची जहां दीक्षार्थियों ने मूलनायक भगवान

शांतिनाथ जी के दर्शन किए। इस दौरान श्री जी की महाआरती के पश्चात समाज द्वारा सोधर्म इन्द्र का दरबार लगाया गया एवं दीक्षार्थियों की गोद भराई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं ने संगीत के साथ पंचमेवो से क्षोल भरी। इस अवसर पर दीक्षार्थी राजेश भैया एवं सुरेश भैया ने उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह संसार असार है व्यक्ति को ज्ञान ध्यान साधना करके वैराग्य को धारण कर मोक्ष मार्ग प्रशस्त करना है। गोदभराई कार्यक्रम के पश्चात दीक्षार्थियों को मुनि शुद्ध सागर महाराज एवं क्षुल्लक अकम्प सागर महाराज ने आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर महावीर प्रसाद पराणा विमल सोगानी दिनेश सोगानी मूलचंद पांडया पदमचंद टोंग्या विष्णु बोहरा शिखरचंद काला महावीर प्रसाद छाबड़ा नरेंद्र सोगानी नीरज जैन हेमचंद संधी त्रिलोक चंद पांडया पुनीत संधी विनोद बनस्थली कमल चंद सोगानी अशोक जैन प्रेमचंद सोगानी धर्मचंद चंवरिया महेंद्र संधी राकेश संधी सूरजमल सोगानी ज्ञानचंद सोगानी मनन दत्तवास पारसमल बड़ागांव त्रिलोक रजवास विमल खण्देवत सहित सैकड़ों श्रद्धालु मौजूद थे।

रुसान फार्मा ने पीथमपुर, मध्य प्रदेश में अपने दूसरे अत्याधुनिक एपीआई प्लांट की शुरूआत की

पीथमपुर, मध्य प्रदेश. शाबाश इंडिया। प्रमुख फार्मास्युटिकल कंपनी, रुसान फार्मा ने हाल ही में पीथमपुर, स्पेशल इकोनॉमिक जोन (एसईजेड), मध्य प्रदेश में अपने अत्याधुनिक एपीआई प्लांट की शुरूआत करके महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। यह कंपनी विश्व स्तर पर स्वास्थ्य सेवा में सुधार करने और दुनिया भर में पीड़ा प्रबंधन एवं नशे आदि की लत छुड़ाने के समाधानों के लिए अग्रणी बनने के लिए प्रतिबद्ध है। यह उपलब्धि रुसान फार्मा के अटूट समर्पण को दर्शाती है कि वह नशा मुक्ति की दवाओं, शराब और तंबाकू की लत की वजह से पनपने वाली समस्याओं का समाधान करने के साथ-साथ भारतीय फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री के विकास में योगदान दे रही है। निरंतर विकास और तकनीकी प्रगति के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, इस प्लांट में दो चरणों में 300 करोड़ रुपए तक का कुल निवेश किया जाएगा। यह निवेश न सिर्फ रुसान फार्मा की प्रतिबद्धता को दर्शाएगा, बल्कि फार्मास्युटिकल उद्योग की वृद्धि को भी बढ़ावा देगा। इस प्लांट को इस प्रकार तैयार किया गया है कि यह उच्चतम स्तर की स्वीकृति सुनिश्चित करने वाली सख्त इंटरनेशनल रेगुलेटरी गाइडलाइन्स के अनुरूप कार्य करे। यह प्लांट सालाना 400 मीट्रिक टन एपीआई की उत्पादन क्षमता से परिपूर्ण है। साथ ही, यह रुसान फार्मा की वृद्धि और आने वाली योजनाओं में महत्वपूर्ण योगदान देगा, जो इसके पोर्टफोलियो में विविधता लाने के साथ ही भारत और अन्य देशों में इसकी पहुँच बढ़ाएगा। पीथमपुर प्लांट के निर्माण चरण के दौरान 3000 से अधिक संविदा कर्मचारी कार्यरत थे। इसके पूरी तरह से शुरू होने के बाद प्रत्यक्ष तौर पर 300 से अधिक कर्मचारियों को रोजगार मिल सकेगा और आने वाले कुछ वर्षों में 500 से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होंगे। डॉ. नवीन सक्सेना, फाउंडर और चेयरमैन, रुसान फार्मा, ने कहा, ''पीथमपुर का यह नवीनतम एपीआई प्लांट, रुसान को हमारी मौजूदा एपीआई क्षमता को बढ़ाने में सक्षम करेगा। इतना ही नहीं, भारत और विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण एपीआई की आपूर्ति भी सुनिश्चित करेगा, ताकि व्यसन उपचार और पीड़ा प्रबंधन संबंधी हमारे उत्पादों की बढ़ती माँग को पूरा किया जा सके। रुसान विगत 30 वर्षों से इस क्षेत्र में निवेश कर रहा है और व्यसन के उपचार को सुलभ बनाने में अग्रणी रहा है। हम मानते हैं कि लोगों को उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाओं का एक समान अधिकार मिलना चाहिए। हमारा लक्ष्य नशे की लत और पीड़ा प्रबंधन के लिए इलाज की इच्छा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति तक इसकी पहुँच सुलभ कराना है।'' यह नवीनतम प्लांट पीथमपुर के केंद्रीय स्थान स्पेशल इकोनॉमिक जोन (एसईजेड) में स्थित है। इसे मध्य प्रदेश राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गई सहायता और सब्सिडी का लाभ मिलेगा। यह स्थान ड्राई पोर्ट के माध्यम से न सिर्फ व्यापार संचालन, बल्कि निर्यात संबंधी प्रक्रियाओं को भी सुव्यवस्थित करने का माध्यम बनेगा। इस प्रकार, यह रुसान फार्मा की आगे बढ़ने वाली योजनाओं के लिए सबसे उत्तम विकल्प बनने के लिए अग्रसर है। एक समर्पित फार्मास्युटिकल क्षेत्र में स्थित यह प्लांट एक स्वच्छ वातावरण प्रदान करता है, जिससे क्षेत्र में अन्य इंडस्ट्रीज से होने वाले प्रदूषण का खतरा कम हो जाता है। इस पहल के बारे में विस्तार से बताते हुए, डॉ. कुणाल सक्सेना, मैनेजिंग डायरेक्टर, रुसान फार्मा, ने कहा, ''रुसान में, हम 'मेक इन इंडिया' पहल को उदाहरण से प्रदर्शित करते हैं, विशेष रूप से नियंत्रित पदार्थों के क्षेत्र में। दो चरणों में लगभग 300 करोड़ रु. के निवेश के साथ, यह नवीनतम एपीआई प्लांट हमारी वर्तमान एपीआई मैन्युफैक्चरिंग की क्षमता को पीथमपुर में बढ़ाकर 400 मीट्रिक टन कर देगा, जो कि अंकलेश्वर में 40 मीट्रिक टन है। हमारा नया प्लांट पाँच मॉड्यूलर एपीआई मैन्युफैक्चरिंग ब्लॉक्स से सुसज्जित है, जिसमें फिनिश्ड एपीआई निर्माण के लिए समर्पित सुइट्स हैं। यह हमारे उत्पादों की गुणवत्ता पर पूरी तरह नियंत्रण बनाए रखता है और आयात पर हमारी निर्भरता को कम करता है।

परम पूज्य उपाध्याय श्री 108 ऊर्जयन्त सागर जी मुनिराज संसघ का आमेर से मंगल विहार हुआ

29 नवंबर को सांयकाल 5 .00 बजे अचरोल स्थित देशभूषण आश्रम में होगा मंगल प्रवेश

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिनांक 27 नवंबर 2023 को श्री संकट हरण पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर फागीवाला आमेर से पूज्य उपाध्याय श्री ऊर्जयन्त सागर जी अपने संयम जीवन के तीसवें और जयपुर के छठे चातुर्मास को पूर्ण कर आज मध्यान्ह धर्म सभा को संबोधित कर वहां से भारी संख्या में जैन समाज के अनेक श्रेष्ठी जनों के साथ मंगल विहार कर दिल्ली रोड कूकस स्थित रूप मंदिर फार्म हाउस में रात्रि विश्राम करेंगे और दिनांक 28 नवम्बर दोपहर 2:00 बजे यहां से विहार कर 9 किलोमीटर दूर बोरा फार्म हाउस पर पधारेंगे जहां गुरुदेव का रात्रि विश्राम होगा। दिनांक 29 नवम्बर को सांयकाल 5.00 बजे अचरोल स्थित देशभूषण आश्रम में भव्य मंगल प्रवेश करेंगे।

राजस्थान जन मंच ट्रस्ट द्वारा जरूरतमंदों को गर्म कपड़ों का वितरण

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान जन मंच ट्रस्ट ने सर्दी से बचाव के लिए स्वेटर, कपड़े, रजाई, कंबल आदि जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाएं। महासचिव कमल लोचन ने बताया कि जयपुर से 20-25 किलोमीटर दूर जाकर जरूरतमंद लोगों को यह सामान वितरित किए। संस्था कार्यकर्ता रवि खत्री, निर्मला शर्मा, रितु लोचन, दर्शन शर्मा, अभय नाहर, जितेंद्र व्यास, धर्मेंद्र पालावत, डॉ. एके ऋषि, पिंकी चावरिया के नेतृत्व में अलग-अलग स्थान पर जाकर कपड़ों आदि का वितरण किया। लोचन ने बताया कि पिछले डेढ़ माह से यह सेवा संबल अभियान चलाया जा रहा है। अब तक 23 प्रोग्राम आयोजित किया जा चुके हैं। इस दौरान जरूरतमंदों को कपड़े और स्वेटर आदि किए गए ताकि समय रहते सर्दी के बचाव के संसाधन सभी तक पहुंच सके। सेवा संबल अभियान के लिए संस्था ने चंद्र प्रकाश राणा, डॉ.कविता गोयल, रवि खत्री, और राज मेहनत के नेतृत्व में एक कमेटी बनाई गई थी, ताकि अभियान को अधिक प्रभावी बनाया जा सके। इस अवसर पर 3000 से अधिक कपड़े आदि इस दौरान जरूरतमंद लोगों को वितरित किए गए।

RJS तृप्ति जैन ने किया भक्तामर विधान

जयपुर. शाबाश इंडिया। तृप्ति जैन (RJS) पुत्री शरत सेठी (एडवोकेट)-ममता सेठी ने आज अपने पूरे परिवारजन के साथ अतिशय क्षेत्र चूलगिरि ,आगरा रोड पर भक्तामर विधान मंडल की पूजन की। इस अवसर पर आचार्य मानतुंग जी द्वारा रचित भक्तामर स्तोत्र के अनुसार 48 दीपकों से भक्तिभाव और संगीतमय विधान पूजन किया गया। इस अवसर पर RJS तृप्ति जैन के दादा दादी एडवोकेट शिखर चन्द सेठी-शांति देवी जी की 62वी वैवाहिक वर्षगांठ भी मनाई गई। इस कार्यक्रम में परिवार के सभी सदस्य भाई एडवोकेट अपूर्व के साथ सभी ने विधान के बाद स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिए। इसके बाद RJS तृप्ति जैन ने जोधपुर के लिए प्रस्थान किया।

प्रभात फेरी और दीपदान के साथ श्री निम्बार्क जयंती महोत्सव की हुई भव्य शुरूआत

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री सर्वेष्वर संसद के बैनर तले निम्बार्क जयंती महोत्सव की शुरूआत सोमवार को प्रभातफेरी व दीपदान के साथ हुई। इस दौरान आसपास का क्षेत्र निम्बार्क भगवान के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। महोत्सव के तहत आज सुबह आनंद कृष्ण बिहारी मंदिर से शहर के विभिन्न रास्तों और मंदिरों में होते हुए प्रभात फेरी निकाली गई। प्रभात फेरी में निंबार्क रसिक जनों ने भक्ति रस की रसधार से रसिक जनों को भिगोया। दोपहर में आनंद कृष्ण बिहारी मंदिर में कल्याण प्रसाद अग्रवाल सूतवाला परिवार की ओर से आयोजित बधाई गान उत्सव में प्रख्यात भजन गायक जुगल किशोर सैनी एवं अन्य साथी कलाकारों के अलावा निम्बार्क भक्तजनों ने सुमधुर बधाई

गान की प्रस्तुति से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। छह दिवसीय इस उत्सव गुरुवार को भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी, इस शोभा यात्रा में परम पूज्य जगतगुरु श्री श्रीजी महाराज स्वयं सम्मिलित होकर आशीर्वाद प्रदान करेंगे। शोभायात्रा में विशेष रूप से तैयार किए गए रथ में विराजमान श्री श्रीजी महाराज के साथ जयपुर, किशनगढ़, अजमेर, पुष्कर के असंख्य भक्त विशेष परिधान में कीर्तन करते चलेंगे। शोभायात्रा सांयकाल 4.30 बजे श्री आनन्द कृष्ण बिहारी जी के मन्दिर से रवाना होकर जयपुर के मुख्य मार्ग त्रिपोलिया बाजार, जौंहरी बाजार, बापू बाजार, चौड़ा रास्ता होते हुए वापस श्री आनन्द कृष्ण बिहारी जी के मन्दिर पहुँच कर सम्पन्न होगी। तत्पश्चात पूज्य श्री श्रीजी महाराज का आशीर्वचन एवं चरण वन्दना का अवसर भी प्राप्त होगा। इससे पहले श्री निम्बार्क महिला मंडल की ओर से 28 नवम्बर को छप्पन भोग आयोजित किया जायेगा। जिसमें सभी वैष्णव परिवार अपने घर से अमणिया (भोग के लिये पकवान) बनाकर लाएंगे। छठीं का उत्सव 2 दिसंबर शनिवार को होगा।

पीपलोंन में मंगल घटयात्रा से हुआ त्रिदिवसीय आयोजन का शुभारंभ

पीपलोंन,आगर, मध्यप्रदेश. शाबाश इंडिया

परम पूज्य चर्या शिरोमणि परम पूज्य आचार्य 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि 108 सुप्रभ सागर जी महाराज एवम मुनि 108 प्रणक सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में दिनांक 27 नवंबर से 29 नवंबर तक भव्य ऐतिहासिक अविस्मरणीय भव्य नवीन वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव जिनबिंब स्थापना समारोह का आयोजन श्री 1008 महावीर दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पिपलोन जिला आगर मध्य प्रदेश में हर्षोल्लास के वातावरण में आयोजित किया रहा है। आज दिनांक 27 नवंबर को सर्व प्रथम नित्य अभिषेक विश्व शांति की मंगल कामना से शांति धारा नित्य नियम पूजन श्रद्धालुओ द्वारा भक्ति भाव श्रद्धा संपर्पण के साथ की गई। तत्पश्चात विशाल घट यात्रा पिपलोन के प्रमुख मार्गो से होती हुई मंदिर परिसर पहुंची जहां पत्रों का चयन किया गया। मिडिया प्रभारी पारस जैन पार्श्वमणि एवम मंदिर समिति के विशेष सहयोगी महेंद्र जैन बाकलीवाल ने बताया कि विधि विधान की क्रियाएं अखिलेश शास्त्री द्वारा करवाई गई। मंदिर परिसर बाबा की जय ज्यकारो से गूंज गया।संगीत के साथ पूजन अर्चन श्री अंश जैन एंड पार्टी द्वारा संपन्न करवाई गई। मुनि श्री सुप्रभ सागर जी महाराज के मंगल प्रवचन भी हुवे। उसके बाद जाप्या अनुष्ठान की क्रिया की गई।सायकल मंगल आरती सांस्कृतिक भजन संध्या का आयोजन भी किया गया। मंदिर समिति के अध्यक्ष प्रदीप जैन बाकलीवाल, सचिव सुनील जैन, उपाध्याक्ष दिनेश जय गोधा ने बताया कि दिनांक 27 नवंबर को नित्य अभिषेक और शांति धारा के बाद याग मंडल विधान एवम श्री वास्तु विधान का आयोजन किया गया। सदस्य जिनेद्र जैन ने बताया कि मुनि श्री के मंगल प्रवचन तथा दिन में मुनि श्री के द्वारा 3.30 बजे पर शंका समाधान भी किया जा रहा हैं। पारस जैन पार्श्वमणि ने बताया कि यहां महावीर भगवान की अति प्राचीन चतुर्थ कालीन मनोहारी प्रतिमा विराजमान है जो भी भक्त सच्ची श्रद्धा भक्ति लगन से आस लेकर आता है उसकी मनोकामना अवश्य पुर्ण होती है प्रत्येक अमावस व पूनम को यहां श्रद्धालुओं का सैलाब दर्शन पूजन वंदन करने आता है।

साध्वी दर्शनप्रभाजी प्रबुद्ध चिन्तिका एवं साध्वी समीक्षाप्रभाजी आगम रसिका से अलंकृत

वीर लोकाशाह जयंति पर श्री अरिहन्त विकास समिति ने समर्पित की आदर की चादर

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। शहर के चन्द्रशेखर आजादनगर स्थित रूप रजत विहार में सोमवार को मरूधरा मणि महासाध्वी श्रीजैनमतिजी म.सा. की सुशिष्या वात्सल्यमूर्ति महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सानिध्य में पांच माह के चातुर्मास का अंतिम दिवस वीर लोकाशाह जयंति के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर चातुर्मास आयोजक श्री अरिहन्त विकास समिति की ओर से पूज्य महासाध्वी डॉ. दर्शनप्रभाजी म.सा. को प्रबुद्ध चिन्तिका एवं पूज्य महासाध्वी डॉ. समीक्षाप्रभाजी म.सा. को आगम रसिका की उपाधि से अलंकृत किया गया। श्रीसंघ के पदाधिकारियों ने पूज्य साध्वी द्वय को उपाधि से अलंकृत करते हुए अभिनंदन पत्र के साथ आदर की चादर समर्पित की। आदर की चादर दोनों महासाध्वियों को साध्वी मण्डल एवं श्राविका मण्डल की सदस्यों ने ओढ़ाई। पूज्य महासाध्वी डॉ. दर्शनप्रभाजी एवं डॉ. समीक्षाप्रभाजी को आदर की चादर समर्पित करने से पूर्व अभिनंदन पत्र का वाचन श्रीसंघ के अध्यक्ष राजेन्द्र सुकलेचा ने किया। उन्होंने कहा कि पूज्य महासाध्वीजी को यह उपाधि प्रदान कर संघ स्वयं को गौरान्वित महसूस कर रहा है। ये संघ का सौभाग्य है कि उसे पहले चातुर्मास में ही ऐसे महासाध्वी मण्डल का आशीर्वाद व सानिध्य प्राप्त हुआ। आगम मर्मज्ञा डॉ. चेतनाश्री जी म.सा. ने कहा कि साध्वी दर्शनप्रभाजी एवं साध्वी समीक्षाप्रभाजी के व्यक्तिव एवं ज्ञान के अनुरूप ही उन्हें श्रीसंघ द्वारा ये उपाधि प्रदान की गई है जिसकी वह अनुमोदना करते है। साध्वी द्वय को उपाधि से अलंकृत करने की घोषणा होते ही रूप रजत विहार सभागार हर्ष-हर्ष, जय-जय के उद्घोष से गूंजायमान हो उठा ओर श्राविका मण्डल केसरिया-केसरिया आज है म्हारो मन केसरिया गा उठा। सभी तरह विदाई के पलों में भी खुशी का नजारा हो गया। श्रीसंघ की ओर से आदर की चादर समर्पित करने वालों में संघ अध्यक्ष राजेन्द्र सुकलेचा, मंत्री सुरेन्द्रकुमार चौरड़िया, संगठन मंत्री नवरतन बाफना, उपाध्यक्ष अनिल ढाबरिया, चातुर्मास संयोजक वीरेन्द्रसिंह कोठारी, कोषाध्यक्ष गणपत कुमठ आदि पदाधिकारी एवं वरिष्ठ सुश्रावक शामिल थे।

निर्यापक मुनिपुंगव का हुआ मोती कटरा जैन बड़ा मंदिर में मंगल आगमन

आगरा. शाबाश इंडिया। मोती कटरा स्थित श्री 1008 अग्रवाल दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में 27 नवंबर को मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ससंघ का चातुर्मास 2023 संपन्न करने के पश्चात हरीपर्वत स्थित एमडी जैन इंटर कॉलेज प्रांगण से मोतीकटरा जैन बड़ा मंदिर के लिए विहार किया। सर्दी में भी मुनिश्री निरंतर अपनी चर्या का पालन करते नजर आए।सभी भक्तों ने मुनिश्री ससंघ के साथ मोती कटरा जैन बड़ा मंदिर के लिए प्रस्थान किया। जगह जगह भक्तों ने मुनिश्री की अगवानी एवं पाद् प्रक्षालन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त। पूरा मोती कटरा बड़ा मंदिर का परिसर मुनिश्री के जयकारों से गूंज रहा था । मंदिर पहुंचने के बाद मुनिपुंगवश्री ने सभी भक्तों को अभिषेक एवं शांतिधारा की विधि के बारे में बताया। जहाँ सभी भक्तों ने मुनिपुंगवश्री के द्वारा बताई गई विधि के अनुसार श्रीजी का अभिषेक एवं शांतिधारा की। इसके बाद मुनिपुंगवश्री ससंघ के सानिध्य में जैन धर्म के तीसरे तीर्थंकर श्री 1008 भगवान संभवनाथ का जन्मकल्याणक महोत्सव बड़े ही उल्लासपूर्ण के साथ मनाया गया।सायःकाल भक्तों ने 1008 दीपकों से भगवान संभवनाथ की मंगल आरती की इस दौरान भक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा था। कार्यक्रम का संचालन मनोज जैन बाकलीबाल द्वारा किया गया। इस अवसर पर अनिल जैन, अनंत जैन,संजीव जैन,पंकज जैन पवन जैन, विजय जैन, विवेक जैन, संजीव जैन, मोनू जैन, डब्बू जैन, पुनीत जैन समस्त सकल जैन समाज मोती कटरा के लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

श्री नेमिनाथ जिन बिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में जन्म कल्याण महोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया

प्रकाश पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। श्री नेमिनाथ जिन बिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव न्यू हाउसिंग बोर्ड शास्त्री नगर में श्रुत संवेगी मुनिश्री आदित्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में दूसरे दिन जन्म कल्याण महोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। समिति के अध्यक्ष राकेश पाटनी ने बताया कि माता के गर्भ से भगवान नेमिनाथ का जन्म पर सौधर्म- इंद्राणी खुशी में झूम उठे। कुबेर इंद्र ने रत्नों की वर्षा की। नेमिनाथ के माता-पिता की खुशियों में सभी इंद्र- इंद्राणियां को प्रभावना को दिया। प्रातः 10:00 बजे सौधर्म इंद्र,-इंद्राणी नेमिनाथ भगवान को हाथों में रखकर ऐरावत हाथी पर सवार थे। सभी इंद्र-इंद्राणियां रथ पर सवार होकर शोभा यात्रा में चल रहे थे। बैंड बाजों की स्वर लहरियो में पुरुष, महिलाएं, युवा नाचते चल रहे थे। शोभा यात्रा पंडाल पर पहुंची। मंच पर सुंदर पांडुक शिला पर प्रतिष्ठाचार्य द्वारा मंत्रोचार विधि- विधान पूरा के नेमिनाथ भगवान को विराजमान किया गया। भक्ति के साथ पांडूकशिला पर सर्वप्रथम सौधर्म इंद्र विजय जैन- इंद्राणी संगीता एवं केशव लाल, सुभाष हूमड ने स्वर्ण कलश से भगवान नेमिनाथ पर महामस्तकाभिषेक कर आनंदित हुए। संजय झाझरी द्वितीय रजत कलश से अभिषेक कर सभी इंद्र-इंद्राणियों ने अभिषेक किया। बाद श्रावकों ने धोती दुपट्टे में बारी-बारी से अभिषेक किया।

गुरु नानक देव जी की जयंती पर विशेष परिचर्चा का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर 554वीं गुरु नानक देव जी की जयंती पर प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री द्वारा रचित लोक चेतना और आध्यात्मिक साधना के वाहक गुरु नानक देव जी पुस्तक पर पाठक संगम एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से परिचर्चा हुई। जिसमें इस पुस्तक में लिखित अध्यायों में विभिन्न पहलुओं पर कुणाल एवं मनोज कुमार ने मुख्य रूप से रोशनी डाली। कुणाल ने गुरुनानक देव के जन्म से पूर्व एवं उनके समय निर्धारण पर प्रकाश डाला। मनोज कुमार ने गुरुनानक देव जी की प्रेरणात्मक घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा उदासियों (यात्राओं)1500 से 1524 तक पांच भाग में जम्बूद्वीप तक सौहार्दपूर्ण तरीके से यात्राओं के बारे में विस्तृत चर्चा की और वरिष्ठ कार्यकर्ता माणक चन्द्र ने कहा गुरुनानक देव जी कभी जातियों एवं मतांतरण के पक्ष में नहीं रहें। आप जिस ईश्वर में विश्वास रखें, उन्हें ही मानें। अंत में गुरुद्वारा के प्रभारी एवं सभी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त करतें हुए राजकुमार ने सभा को अंतिम रूप दिया।

निर्यापक श्रमण मुनि श्री समय सागर जी महाराज ने कहा...

मार्ग हम बता रहे हैं, दर्शन डोंगरगढ़ जाने पर मिलेंगे

निर्यापक श्रमण जेष्ठ श्रेष्ठ श्री समय सागर जी महाराज की अगवानी में पहुंची कमेटी, अशोक नगर समाज व थूवोनजी कमेटी कर रहीं हैं प्रतिक्षा : विजय धुर्रा

अशोक नगर. शाबाश इंडिया। संत शिरोमणि आचार्य भगवंत गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य जेष्ठ श्रेष्ठ निर्यापक श्रमण मुनि श्री समय सागर जी महाराज ससंघ का खुरई से खिमलाशा की ओर मंगल विहार हो गया। विहार में पहुंच कर श्री दिगम्बर जैन पंचायत कमेटी एवं श्री दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी की ओर से श्री फल भेंट कर अशोक नगर व अतिशय क्षेत्र दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी की ओर विहार का निवेदन परम पूज्य मुनि संघ से किया। मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने खिमलाशा से लौटकर बताया कि समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल, महामंत्री राकेश अमरोद, कोषाध्यक्ष सुनील अखाई, मंत्री विजय धुर्रा, शैलेन्द्र श्रागर, संयोजक उमेश सिघई, थूवोनजी कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल, महामंत्री विपिन सिंघई, कोषाध्यक्ष सौरव वाझल, आडिटर राजीव चन्देरी, मनोज भैसरवास, मनीष वरखेडा सहित अन्य भक्तों ने श्री फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। भक्तो कि जय जयकार और डोल बाजों की गूंज के बीच संत शिरोमणि आचार्य भगवंत गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री समयसागरजी महाराज ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश खिमलाशा नगर में हुआ। जहां भक्तो ने श्री फल भेंट कर पाद प्रक्षालन और आरती उतार कर मुनि संघ की भव्य आगवानी की यहां शोभायात्रा आचार्य श्री विद्यासागर भवन पहुंचकर धर्म सभा में बदल गई जहां संत शिरोमणि आचार्य भगवंत गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज की भव्य पूजन अशोक नगर युवा वर्ग के संरक्षण शैलेन्द्र श्रागर के मधुर भजनों के साथ भक्तो द्वारा की गई।

जय जवान कॉलोनी जैन मंदिर में सिद्ध चक्र विधान का हुआ आयोजन

आचार्यश्री चैत्य सागर महाराज का पिच्छी परिवर्तन समारोह आज

जयपुर. शाबाश इंडिया। अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर टोंक रोड,जय जवान कॉलोनी के श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में परम पूज्य आचार्यश्री चैत्य सागर महाराज के सानिध्य में कांता देवी, रश्मिकांत-अलका सोनी एवं समस्त सोनी परिवार लाल बहादुर नगर एवेन्यु -द्वितीय निवासी की ओर से सिद्धचक्र विधान का आयोजन हुआ ।इस मौके पर काफी संख्या में समाज के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अशोक जैन नेता ने बताया कि आयोजन के तहत सुबह नित्य नियम पूजा के तहत साजों के बीच श्रीजी की पूजा की गई। इसके बाद विधान में बैठे श्रद्धालुओं ने आया सिद्धचक्र मंडल विधान...कर लो जिनवर का गुणगान जैसी भजनों की स्वर लहरियों के बीच मंडल पर अर्घ्य चढ़ाए। उन्होंने बताया कि महोत्सव के दौरान 28 नवम्बर को सुबह नित्य नियम पूजा के बाद विश्वशांति महायज्ञ व श्रीजी की शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसके बाद सुबह 11 बजे आचार्यश्री चैत्य सागर महाराज का पिच्छी परिवर्तन समारोह मनाया जाएगा।